प्रधान–सम्पादक
यशदेव शल्य
मुकुंद लाठ

सम्पादक
अम्बिकादत्त शर्मा
प्रदीप कुमार खरे

उन्मीलन

मानसिक हिन्द स्वराज का वैतालिक
दार्शनिक षाण्मासिक

वर्ष 32, अंक 1
जनवरी-जून, 2018

अद्वैत पद्धतिशास्त्र : मानवतावादी ज्ञान-विनिर्माण का पद्धतिमूलक विमर्श

अम्बिकादत्त शर्मा
विश्वनाथ मिश्र

किसी भी ग्रन्थ, समाज, संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन कैसे किया जाय और इसके लिए किस प्रकार की अध्ययन पद्धति को अपनाया जाय, यह आज भी अकादमिक बहस का एक विशिष्ट क्षेत्र बना हुआ है। इस दिशा में पश्चिम में बुद्धिवाद, अनुभववाद, व्यवहारवाद, प्रत्यक्षवाद, संवृत्तिशास्त्र, उत्तर–आधुनिकतावाद, नारीवाद एवं द्वन्द्ववाद जैसी अनेक पद्धतियों का विकास हुआ है। इसी तरह परम्परागत भारतीय दार्शनिक साहित्य में भी पद्धतिशास्त्रीय दृष्टि से अनेक विधाओं के संदर्भ प्राप्त होते हैं। इन्हें अध्यारोप–अपवाद पद्धति (अद्वैत वेदान्त), प्रसंगापादन पद्धति (माध्यमिक बौद्ध), अमराविक्षेप पद्धति (संशयवादी), उद्देश्य–लक्षण–परीक्षा पद्धति (न्यायशास्त्र) और वाक्यार्थ–निर्णय पद्धति (मीमांसा दर्शन) के रुप में दर्शन सम्प्रदायों में मान्यता मिली है। पश्चिमी चिन्तन परम्परा में और तद्नुरूप भारतीय चिन्तन परम्परा में भी दार्शनिक संवर्गों का एक व्यापक समूह 'प्रत्यक्ष' को ज्ञान के सबसे प्रभावी स्रोत के रूप में मान्यता प्रदान करने हेतु व्यापक उपक्रम किया है। अरस्तू की त्रिपदीय तर्क प्रणाली और न्याय दर्शन की पंचपदीय तर्क प्रणाली इस तथ्य के प्रमाणभूत सन्दर्भ हैं। किन्तु, भारतीय तर्क प्रणाली में प्रत्यक्ष आधारित ज्ञान को बाधित करने वाले तत्त्वों की भी विशेष रूप से चर्चा हुई है। प्रत्यक्ष की विभिन्न परिभाषाओं (लक्षणों) और प्रत्यक्षाभास तथा भ्रम पर केन्द्रित व्यापक परिचर्चा के माध्यम से भारतीय दर्शन में प्रत्यक्षजन्य ज्ञान की कमियों को भी रेखांकित करने का प्रयास हुआ है। वस्तुतः बहुविध ख्याति–सिद्धान्तों के द्वारा भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष ज्ञान की सीमाओं का ही उल्लेख हुआ है। पश्चिम में भी अरस्तू के समय से ही प्रत्यक्ष ज्ञान की सीमाओं को समझने का उपक्रम होता रहा है। स्वयं उन्हीं के द्वारा प्रणीत सोद्देश्यता सिद्धान्त एवं कारणता सिद्धान्त के